सभी प्रकार की सरकारी सहायताओं से मुक्त, खोजी पत्रकारिता का तेज बढ़ता अखबार

दैनिक

themovementofindia.in

द मूवमेंट ऑफ़ इंडिया

RNI No. RAJHIN/2012/48876
पोस्टल पंजीयन नं. भीलवाड़ा / 2025-2027

खोजी खबरें-तेज नजरें

प्रेरणा स्रोत - स्व. चुन्नीलाल सालवी

ये अखबार ही नहीं क्रांति का अभियान है। मानवता एवं लोकतंत्र का सजग प्रहरी, ये दुष्टों की मौत का सामान है।

वर्ष - 14 अंक -22 | 12 जुलाई 2025,शनिवार | संपादक - दयाराम दिव्य | सहसंपादक - चाहत सालवी | मूल्य - 2 रू.

स्कूल बस और स्लीपर कोच में टक्कर, 10 साल के छात्र की मौत; कई घायल..!

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

सुरज वर्मा

बिजयनगर के राष्ट्रीय राजमार्ग-48 पर शनिवार सुबह एक दर्दनाक हादसे की खबर सामने आई है। जिले के बाड़ी रोड पर स्थित संजीवनी स्कूल की बस और एक निजी स्लीपर कोच बस के बीच आमने-सामने की टक्कर में 10 वर्षीय छात्र मानवेंद्र सिंह की मौत हो गई, जबकि 7 से 8 अन्य स्कूली बच्चे गंभीर रूप से घायल हो गए। इस हादसे के बाद परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है

कैसे हुआ सड़क हादसा?

पुलिस के अनुसार स्कूल बस और स्लीपर कोच के बीच टक्कर सुबह करीब 8 बजे के आसपास हुई। बताया कि स्कूल बस और स्लीपर कोच एक-दूसरे को ओवरटेक करने की कोशिश कर रहे थे। विजयनगर थाना प्रभारी करण सिंह खंगारोत ने बताया कि प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि दोनों वाहनों के चालकों की लापरवाही चलते यह हादसा हुआ है।इस स्कूल बस में करीब 30 बच्चे सवार थे। सभी बच्चे सुबह स्कूल जा रहे थे। टक्कर इतनी तेज थी कि स्कूल बस का अगला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया और मौके पर चीख-पुकार मच गई

मृतक छात्र की हुई पहचान

हादसे में मारे गए 10 वर्षीय मानवेंद्र सिंह मध्य प्रदेश के रहने वाले थे। वे छह दिन पहले ही संजीवनी स्कूल में दाखिल हुए थे। बताया जा रहा है कि मानवेंद्र स्कूल बस के चालक के भतीजे थे और हादसे के समय बस की आगे वाली सीट पर बैठे थे। टक्कर के बाद उन्हें तुरंत स्थानीय राजकीय उपजिला अस्पताल ले जाया गया, लेकिन

गंभीर चोटों के कारण डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। वहीं, इस हादसे में 7 से 8 अन्य बच्चे गंभीर रूप से घायल हुए हैं, जिनमें से दो की हालत नाजुक बनी हुई है। स्थानीय लोगों ने घायल बच्चों को तुरंत अस्पताल पहुंचाया, जहां उनका इलाज जारी है। स्कूल बस का चालक भी इस हादसे में गंभीर रूप से घायल हुआ है और वह बेहोशी की हालत में है पुलिस ने वाहनों को जब्त किया हादसे की सूचना मिलते ही विजयनगर पुलिस मौके पर पहुंची और बचाव कार्य शुरू किया। पुलिस ने दोनों वाहनों को जब्त कर लिया है और मामले की गहन जांच शुरू कर दी है। स्थानीय लोगों का कहना है कि ह॥-48 पर अक्सर तेज रफ्तार से वाहन चलाए जाते हैं, जिससे हादसों का खतरा बढ़ जाता है

माता-पिता तीर्थ गए, बेटे ने चुराए सोने चांदी के आभूषण

जोधपुर के माता का थान थाना पुलिस ने खुद के ही घर में चोरी करने वाले चोर को गिरफ्तार किया है। चोर के माता पिता तीर्थ दर्शन के लिए गए पीछे से मौका पाकर अपने ही माता-पिता और दादी के गहने चुरा लिए और बाद में खुद ही पुलिस थाने में जाकर रिपोर्ट दे आया, लेकिन पुलिस ने जब जांच की तब इस पूरे मामले का खुलासा हुआ। पुलिस ने अब आरोपी श्रवण गहलोत (27)पुत्र मगराज माली निवासी नवोड़ा बेरा को गिरफ्तार किया है।

कपड़े की दुकान में हुआ घाटा

दरअसल आरोपी ने कपड़े की दुकान खोली थी। जिसमें घाटा होने की वजह से उस पर 20 लख रुपए का कर्जा हो गया था। कई लोग उससे उधार पैसा भी मांगते थे और लोगों ने उसे उधार माल देना भी बंद कर दिया था। इसके चलते आरोपी ने एक योजना बनाई।

आरोपी के माता-पिता हरिद्वार में दर्शन करने के लिए घर से बाहर गए हुए थे। पीछे घर में आरोपी खुद ही अकेला था। इस पर उसने सोचा की माता-पिता घर से बाहर गए हुए हैं और पीछे सोने चांदी के आभूषणों को चुरा लेता हूं और घर वालों को चोरी के बारे में सूचना दे दूंगा। इसी उद्देश्य के चलते आरोपी ने अपनी मां दादी और चाचा के उसके घर पर रखे सोने चांदी के आभूषणों को कमरे में रखे बक्से और तिजोरी से निकाल कर छुपा दिए। उसके बाद आरोपी ने घर के अंदर रखे बक्से, तिजोरी के ताले तोड़कर सामान को बिखेरकर नकबजनी का रूप दे दिया। बाद में अपने मकान के ऊपर बने कमरे में परिवार सहित जाकर सो गया।

सुबह होने पर आसपास के लोगों को बताया कि उसके घर पर अज्ञात चोर आए और चोरी कर सोने चांदी के आभूषण चुरा कर ले गए और खुद ही पुलिस थाने पर जाकर सोने चांदी के चोरी होने की रिपोर्ट दे आया।

जयपुर में तेज-रफ्तार कार ने बच्चे समेत तीन को कुचला:शराब के नशे मे था ड्राइवर

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

जयपुर में आज सुबह साढ़े 7 बजे कार ने बाइक सवार तीन लोगों को कुचल दिया। घटना आमेर थाना इलाके में टंकी के पास की है। हादसे के बाद कार ड्राइवर मौके से भागने की कोशिश कर रहा था, जिसे स्थानीय लोगों ने पीछा कर पकड़ लिया। जो शराब के नशे मे था।

दुर्घटना थाने के एएसआई माधोसिंह ने बताया- आज सुबह आमेर थाने से 2 किलोमीटर दूरी पर पानी की टंकी के पास एक कार ने बाइक सवार तीन लोगों को टक्कर मार दी। इसमें एक 7 साल का बच्चा भी शामिल है। बाइक सहित तीनों सड़क पर गिर गए। हादसे में हांडीपुरा रेगरों का मोहल्ला निवासी लालीदेवी पत्नी श्रवण लाल (37), जितेन्द्र (41) और लवीश (7) को गम्भीर चोट आई। तीनों घायलों को स्थानीय लोग 108 की सहायता से सीएचसी आमेर लेकर गए। लालीदेवी की रीड की हड्डी में गम्भीर चोट लगने से एसएमएस ट्रोमा सेंटर में भर्ती कराया गया। कार चालक शराब के नशे में होने कारण उसे आमेर थाना पुलिस ने शांतिभंग में गिरफ्तार किया। साथ ही आरोपी का मेडिकल कराया गया। कार को जब्त कर लिया गया है। स्थानीय लोगों ने आरोप लगाया कि कई बार आमेर थाना पुलिस को घटना की दी जानकारी दी। लेकिन कोई मौके पर नहीं पहुंचा। लोग खुद घायलों को लेकर आमेर सीएचसी पहुंचे।

अवैध डोडा-चूरा तस्करी में शामिल 2 गिरफ्तार:भीलवाड़ा पुलिस ने जोधपुर से पकड़ा

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भीलवाड़ा में मादक पदार्थों की तस्करी रोकने के लिए जिले में लगातार अभियान चलाए जा रहे हैं। इसी के तहत रायला थाना पुलिस ने मादक पदार्थ तस्करी के मामले में फरार चल रहे दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

रायला थाना प्रभारी बछराज ने बताया कि 14 मई को अवैध मादक पदार्थ तस्करी के खिलाफ कार्रवाई की गई थी, इस कार्रवाई के दौरान तस्कर नेशनल हाईवे 48 भीलवाड़ा रोड पर अपनी गाड़ी छोड़कर भाग गए थे। इस गाड़ी से 45 किलो अवैध मादक पदार्थ डोडा चूरा जब्त किया था और एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया था।

गाड़ी मालिक को भी गिरफ्तार किया

इस मामले में फरार गाड़ी मालिक दिनेश पिता जीवन राम गहलोत को

28 जून को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया था। इस मामले में शामिल दो आरोपियों की की गिरफ्तारी के लिए पुलिस द्वारा एक विशेष टीम का गठन किया गया।

पुलिस ने दो को जोधपुर से पकड़ा

पुलिस ने इस मामले में शामिल विष्णु (26) पुत्र धर्म जाट निवासी जोधपुर और मनोज (21) पुत्र राम सिंह बिश्नोई निवासी जोधपुर की तलाश में जोधपुर पहुंची और जोधपुर पुलिस के सहयोग से दोनों को गिरफ्तार कर इन दोनों से डिटेल इन्वेस्टिगेशन किया जा रहा है।

ये थे टीम में शामिल

अवैध डोडा चूरा तस्करी के मामले में कार्रवाई करने गई टीम में रायला थाना प्रभारी बछराज, हेड कॉन्स्टेबल मुकेश कुमार, कॉन्स्टेबल घासी लाल, विक्रम,ओम प्रकाश और पुलिस थाना डांगियावास जोधपुर का विशेष सहयोग रहा।

C M Y K

सम्पादकीय

रिश्तों को संवारने की नई पाठशाला

देवानंद, मुमताज और चेतन आनंद अभिनीत एक हिट फिल्म आई थी-तेरे-मेरे सपने। इससे पहले देवानंद की ही फिल्म गाइड का गाना युवाओं की जुबान पर चढ़ गया था-तेरे-मेरे सपने अब एक रंग हैं। हालांकि पचास साल से अधिक के समय में बहुत कुछ बदल चुका है। संबंधों में भावुकता के मुकाबले 'प्रेक्टिकलिटी' ने स्थान बना लिया है। मामूली बातों पर संबंध खत्म हो रहे हैं। यदि किसी ने हैप्पी बर्थडे नहीं कहा तो भी 'टाटा-बाय बाय'। वैवाहिक संबंधों में स्थायित्व तक नहीं रहा। बच्चे भी अब संबंध टूटने की राह में रोड़ा नहीं बनते। पिछले दिनों एक स्त्री ने चार बच्चों के होते हुए भी चार बच्चों के पिता से शादी रचा ली। इसी तरह एक महिला नौ बच्चों के होते हुए भी अपने पुरुष मित्र के साथ चली गई। उसका सबसे छोटा बच्चा आठ-नौ महीने का था। वह रो-रोकर मां को पुकारता रहा, लेकिन वह नहीं रुकी। यही हाल पुरुषों का भी है। किसी और महिला से संबंध बनाने के चक्कर में वे बाल-बच्चों को छोड़कर चले जाते हैं। इसके अलावा संबंधों में हत्या भी जोर पकड़ रही है। कोई पत्नी को मार रहा है, कोई पति को, तो कोई लिव इन पार्टनर को। हाल में इसी अखबार में खबर छपी कि ऐसी घटनाओं से महिला आयोग बहुत चिंतित है। इसलिए दस राज्यों के 24 शहरों में ऐसे संवाद केंद्र स्थापित किए जाएंगे, जहां विवाह से पहले युवक-युवती आपस में बातचीत कर सकें। इन केंद्रों का नाम होगा-तेरे-मेरे सपने। यहां युवाओं को मानसिक स्वास्थ्य, पारिवारिक जिम्मेदारियों को लेकर जागरूक किया जाएगा। माना जा रहा है कि इससे विवाह में स्थायित्व आएगा। तलाक में कमी आएगी। घरेलू हिंसा भी रोकी जा सकेगी। महिला आयोग ने इन केंद्रों से जोड़े जाने वाले लोगों के लिए एक सिलेबस तैयार किया है।उन्हें प्रशिक्षण भी दिया गया। मूल रूप से यह बातें बहुत अच्छी हैं, लेकिन ये सब पढ़ते हुए लगा कि क्या वाकई अब हमारे परिवारों में ऐसा कोई नहीं रहा, जो बच्चों को विवाह और उसकी जिम्मेदारियों के लिए तैयार कर सके। इसके लिए बाहर वालों की मदद चाहिए।

प्रधान संपादक - दयाराम दिव्य

भामाशाह राम कुंवार गोरा के द्वारा विद्यालय में वाटर कूलर भेंट राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

सुरज वर्मा

शाहपुरा शहर के तहनाल गेट में छात्र-छात्राओं के लिए बच्चखेड़ा निवासी श्री राम कुमार जी गोरा द्वारा वाटर कूलर भेंट किया गया इस अवसर पर भामाशाह गोरा ने अपने हाथों से विद्यालय के छात्र-छात्राओं को केले वितरण किये द्यगोरा द्वारा पूरे श्रावण मास में प्रतिदिन अलग-अलग विद्यालयों में वर्षों से फलों का वितरण किया जाता है तथा पूरे वर्ष भर अमावस्या एवं

पूर्णिमा के अवसर पर भी अलग-अलग विद्यालयों में फलों का वितरण किया जाता है, आपने अनेक विद्यालयों में अपनी तरफ से वाटर कूलर और शिक्षण सामग्री भेंट की है, श्री गोरा के कर कमलों से विद्यालय में पाम का पौधा लगाकर वृक्षारोपण का शुभारंभ किया गया द्य इस अवसर पर प्राचार्य सुमन कुमारी एवं विद्यालय परिवार के सदस्य सुनील सुखवाल, सूर्य प्रकाश शर्मा, महेश कुमार व्यास, हंसा हाडा, गुलाबचंद रेगर, शकुंतला मीणा ,प्रतिभा सोलंकी ,चंद्रकला टांक ,अनीता व्यास,प्रेम मीणा एवं छात्राएं उपस्थित थे द्ध विद्यालय परिवार द्वारा रामकुवार गोरा एवम् उनके पुत्र भंवरलाल गोरा का अभिनंदन एवं स्वागत किया गया और प्राचार्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया ।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने किया ट्रस्ट अध्यक्ष का सालवी का सम्मान

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

मात्रिकुंडियां बाबा राम देव मंदिर ट्रस्ट के नव निर्वाचित अध्यक्ष शॅकर लाल सालवी तथा अन्य पदाधिकारीगण का भारतीय दलित साहित्य अकादमी चितोडगढ के जिलाध्यक्ष मदन सालवी ओजस्वी द्वारा सम्मान किया गया।इस दौरान विभिन्न सामाजिक विषयों पर चिंतन मनन के साथ चर्चा की गई। इस दोरान ओजस्वी ने बताया कि आज अपनी युवा पीढी को वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा मानवतावाद की ओर बढना ओर होगा। पढने के साथ साथ जागरूकता भी बहूत आवश्यक

है। हमें अब अंधविश्वास आडम्बर रूढीवाद के कामों से मुक्त होना होगा।

कोचिंग सेंटर अब 'पोचिंग सेंटर' बन गए हैं- उपराष्ट्रपति

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भारत के उपराष्ट्रपति, श्री जगदीप धनखड़ ने आज कहा, ÷कोचिंग सेंटर अब 'पोचिंग सेंटर' बन चुके हैं। ये सुदृढ़ सांचों में प्रतिभा को जकड़ने वाले काले छिद्र बन गए हैं। कोचिंग सेंटर अनियंत्रित रूप से फैल रहे हैं, जो हमारे युवाओं के लिए, जो कि हमारे भविष्य हैं–एक गंभीर संकट बनता जा रहा है। हमें इस चिंताजनक बुराई से निपटना ही होगा। हम अपनी शिक्षा को इस तरह कलंकित और दूषित नहीं होने दे सकते।

श्री धनखड़ ने आगे कहा, ÷अब देश किसी सैन्य आक्रमण से नहीं, बल्कि विदेशी डिजिटल बुनियादी ढांचे पर निर्भरता से कमजोर और पराधीन होंगे। सेनाएं अब एल्गोरिद्म में बदल गई हैं। संप्रभुता की रक्षा का संघर्ष अब तकनीकी स्तर पर लड़ा जाएगा। उपराष्ट्रपति ने तकनीकी नेतृत्व को नई राष्ट्रभक्ति का आधार बताते हुए कहा, ÷हम एक नए युग में प्रवेश कर रहे हैं–एक नए राष्ट्रवाद के युग में। तकनीकी नेतृत्व अब देशभक्ति की नई सीमा रेखा है। हमें तकनीकी नेतृत्व में वैश्विक अगुवा बनना होगा।÷

श्री धनखड़ ने रक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आयात-निर्भरता पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा, ÷यदि हम रक्षा के क्षेत्र में बाहर से तकनीकी उपकरण प्राप्त करते हैं, तो वह देश हमें ठहराव की स्थिति में ला सकता है।

डिजिटल युग में बदलती वैश्विक शक्ति संरचनाओं की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा, ÷21वीं सदी का युद्धक्षेत्र अब भूमि या समुद्र नहीं है। पारंपरिक युद्ध अब अतीत की बात हो गई है। आज हमारी शक्ति और प्रभाव 'कोड, क्लाउड और साइबर' से तय होते हैं।

भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (IIIT), कोटा, राजस्थान के चौथे दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए श्री धनखड़ ने कहा, ÷हम गुरुकुल की बात कैसे न करें? हमारे संविधान की 22 दृश्य-प्रतिमाओं में एक गुरुकुल की छवि भी है। हम सदैव ज्ञानदान में विश्वास रखते आए हैं। कोचिंग सेंटर को अपने ढांचे का उपयोग कौशल केंद्रों में परिवर्तित करने के लिए करना चाहिए। मैं नागरिक समाज और जनप्रतिनिधियों से आग्रह करता हूं कि इस समस्या की गंभीरता को समझें और शिक्षा में पुनर्संयम लाने हेतु एकजुट हों। हमें कौशल आधारित कोचिंग की आवश्यकता है।÷

श्री धनखड़ ने अंकों की होड़ के दुष्परिणामों पर चेताते हुए कहा, ÷पूर्णांक और मानकीकरण के प्रति जुनून ने जिज्ञासा को खत्म कर दिया है, जो कि मानव बुद्धिमत्ता का एक स्वाभाविक अंग है। सीटें सीमित हैं लेकिन कोचिंग सेंटर हर जगह फैले हुए हैं। वे वर्षों तक छात्रों के मन को एक ही ढर्रे में ढालते हैं, जिससे उनकी सोचने की शक्ति अवरुद्ध हो जाती है। इससे कई मनोवैज्ञानिक समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

छात्रों को अंकों से ऊपर सोचने की प्रेरणा देते हुए उन्होंने कहा, ÷आपकी मार्कशीट और अंक आपको परिभाषित नहीं करेंगे। प्रतिस्पर्धी दुनिया में प्रवेश करते समय, आपका ज्ञान और सोचने की क्षमता ही आपको परिभाषित करेगी।÷ डिजिटल क्षेत्र की चर्चा करते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा, ÷एक स्मार्ट ऐप जो ग्रामीण भारत में काम नहीं करता, वह पर्याप्त स्मार्ट नहीं है। एक एआई मॉडल जो क्षेत्रीय भाषाओं को नहीं समझता, वह अधूरा है। एक डिजिटल उपकरण जो दिव्यांगों को शामिल नहीं करता, वह अन्यायपूर्ण है।

युवाओं से स्थानीय समाधान को वैश्विक स्तर तक ले जाने का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा, ÷भारत के युवाओं को टेक्नोलॉजी की दुनिया के सजग संरक्षक बनना चाहिए। हमें भारत के लिए भारतीय प्रणालियां बनानी होंगी और उन्हें वैश्विक बनाना होगा।÷

डिजिटल आत्मनिर्भरता में भारत को अग्रणी बनाने का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा, ÷हमें अपनी डिजिटल नियति के निर्माता बनना होगा और अन्य देशों की नियति को भी प्रभावित करना होगा। हमारे कोडर, डेटा वैज्ञानिक, ब्लॉकचेन इनोवेटर और एआई इंजीनियर आज के राष्ट्र निर्माता हैं। भारत, जो कभी वैश्विक अग्रणी था, अब केवल उधार की तकनीक का उपयोगकर्ता बनकर नहीं रह सकता। पहले हमें तकनीक के लिए वर्षों प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। अब यह समय सप्ताहों में सिमट गया है। हमें तकनीक का निर्यातक बनना चाहिए।

ट्रेलर की टक्कर से बाइक सवार पत्थर फैक्ट्रीकर्मी की मौत

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

बिजौलिया में राष्ट्रीय राजमार्ग 27 पर स्थित कामा बाइपास पर शुक्रवार रात एक ट्रक ने बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार पत्थर फैक्ट्री में कार्यरत एक युवक की मौत हो गई, जबकि उसका साथी गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल युवक को बिजौलिया से भीलवाड़ा जिला अस्पताल रेफर किया गया है।

हेड कॉन्स्टेबल दलाराम ने बताया कि कामा निवासी दिनेश रेगर (30) पुत्र चुन्नीलाल और उसका साथी गणेशपुरा निवासी सागर धाकड़ पुत्र हीरानंद बिजौलिया से काम कर अपने गांव लौट रहे थे।इसी दौरान रात करीब 9 बजे कामा चौराहे के पास एक तेज रफ्तार ट्रेलर ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। घटना के बाद ट्रेलर चालक मौके से फरार हो गया।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, ट्रेलर ड्राइवर ने टक्कर के बाद भागने की कोशिश की और पीछा कर रहे लोगों को भी कुचलने का प्रयास किया। हादसे के बाद, दोनों घायलों को तुरंत बिजौलिया के उप जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां से उन्हें भीलवाड़ा जिला अस्पताल रेफर किया गया। रास्ते में दिनेश ने दम तोड़ दिया। मृतक युवक अविवाहित था।

जड़ ही कमजोर है!

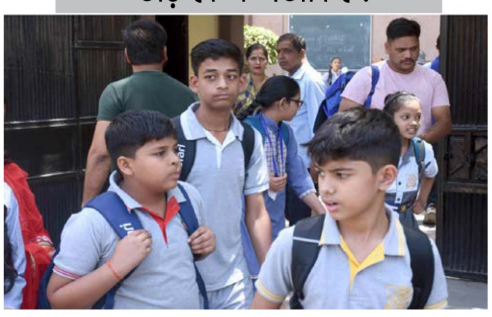

भारत की शिक्षा व्यवस्था छात्रों को उनकी भावी जिंदगी के लिए तैयार कर रही है, या सिर्फ खानापूरी कर रही है? प्रकाश सर्वे से जो नजर आया है, वह बेहद गंभीर चिंता का विषय है। हमारे बच्चों की जड़ ही कमजोर है। भारत में छठी कक्षा के 43 फीसदी छात्र जो पाठ्य (टेक्स्ट) पढ़ते हैं, उसका अर्थ नहीं समझते। इसी कक्षा के 54 फीसदी छात्र संख्याओं की तुलना करने या बड़ी संख्याओं को पढ़ने में अक्षम हैँ। नौवीं कक्षा के 63 प्रतिशत छात्र संख्याओं के बुनियादी पैटर्न तथा भिन्न एवं पूर्णांक जैसे सांख्यात्मक समुच्चय को नहीं समझ पाते। ऐसे चिंताजनक तथ्य भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के -प्रकाश राष्ट्रीय सर्वेक्षण- से सामने आए हैं। इस सर्वेक्षण को नेशनल अचीवमेंट सर्वे (एनएएस) के नाम से भी जाना जाता है। यानी यह सरकार का अपना सर्वे है, किसी एनजीओ आदि का नहीं, जिस पर कई तरह के प्रश्न खड़े कर दिए जाते हैं। यह सर्वे पिछले दिसंबर में हुआ। नतीजे अब जारी हुए हैं। सर्वेक्षण के दौरान तीसरी, छठी और नौवीं कक्षाओं के 21 लाख 15 हजार से अधिक छात्रों की पढ़ने-लिखने की क्षमता का जायजा लिया गया। ये छात्र 36 राज्यों में 781 जिलों के 74,229 स्कूलों में पढ़ रहे हैं। यानी सर्वे से उभरी तस्वीर देशव्यापी है। सर्वे रिपोर्ट के मुताबिक सबसे बड़ी समस्या गणित के संदर्भ में सामने आई है। मगर अन्य विषयों की स्थिति भी बहुत बेहतर नहीं है। मसलन, भूगोल का ज्ञान मापने के लिए नदियों और पहाड़ों की पहचान संबंधी सवाल पर 51 प्रतिशत छात्रों ने गलत जवाब दिए। इसी तरह पंचायतों का काम क्या है या त्योहारों का मौसम से क्या संबंध है, आदि जैसे प्रश्नों पर भी अधिकांश छात्रों का ज्ञान कमजोर पाया गया। तो बुनियादी सवाल यह उठता है कि भारत की शिक्षा व्यवस्था छात्रों को उनकी भावी जिंदगी के लिए तैयार कर रही है, या सिर्फ खानापूरी कर रही है? आधुनिक दौर में विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग और गणित में महारत तथा सामाजिक- सांस्कृतिक चेतना के बिना अग्रणी राष्ट्र के निर्माण की बात सोची भी नहीं जा सकती। इन बिंदुओं पर बच्चों की जड़ ही कमजोर हो जाए, तो आगे लाख कोशिश कर भी उसकी पूरी भरपाई नहीं की जा सकती। तो प्रकाश से जो नजर आया है, वह बेहद गंभीर चिंता का विषय है। मगर ये चिंता कौन करेगा, यह सवाल भी हमारे सामने खड़ा है।

महाराष्ट्र में क्या करेगी कांग्रेस!

महाराष्ट्र में कांग्रेस के सामने सांप छुछुंदर वाली स्थिति हो गई। उद्धव ठाकरे ने कांग्रेस से सलाह मशविरा किए बगैर राज ठाकरे के साथ तालमेल कर लिया। दोनों भाई एक हो गए। मराठी अस्मिता के नाम पर दोनों ने एक साथ रैली की और अब दोनों के कार्यकर्ता साथ साथ सड़कों पर उतरे हैं। कांग्रेस के दूसरे सहयोगी शरद पवार को इससे कोई समस्या नहीं है, बल्कि कहा जा रहा है कि वे इस तालमेल के आर्किटेक्ट हैं। उन्होंने ठाकरे बंधुओं की नजदीकी बनवाई है और इसका मकसद एकनाथ शिंदे को कमजोर करके भाजपा में उनकी स्थिति खराब करना है। अगर वे कमजोर हुए तो फिर ठाकरे बंधुओं की एकजुट पार्टी फिर भाजपा के साथ जा सकती है। यानी महाराष्ट्र की राजनीति पुरानी नॉर्मल स्थिति में लौट सकती है। लेकिन इससे कांग्रेस पार्टी की चिंता बढ़ी है। कांग्रेस को समझ में नहीं आ रहा है कि वह क्या करे? बिहार में विधानसभा का चुनाव है और हिंदी भाषी लोगों पर हमले के बाद कांग्रेस पर सवाल उठने लगे हैं। उधर महाराष्ट्र में स्थानीय निकाय चुनाव आने वाले हैं, जिसमें यह स्पष्ट नहीं हो रहा है कि गठबंधन रहेगा या नहीं। कांग्रेस के नेता अकेले लड़ने की बात कर रहे हैं क्योंकि कांग्रेस के लिए राज ठाकरे के साथ जाना संभव नहीं है। भाषा और धर्म को लेकर उनकी राजनीति देश के दूसरे हिस्सों में कांग्रेस का बड़ा नुकसान कर सकती है। कांग्रेस की स्थिति अब माया मिली न राम वाली हो गई है। उद्धव ठाकरे के साथ जाकर उसने एक समझौता किया था और मुस्लिम मतदाताओं को भरोसा दिलाया था कि सब ठीक है। लेकिन अब उद्धव भी राज ठाकरे जैसी राजनीति करने लगे हैं तो कांग्रेस के सामने साख का संकट भी खड़ा हो गया है। मुंबई में शरद पवार की पार्टी का ज्यादा असर नहीं है। सो, बीएमसी का चुनाव कांग्रेस को अकेले ही लड़ना होगा।

बिहार चुनावों में महिलाओं पर दांव के निहितार्थ!

बिहार में इस साल अक्टूबर-नवंबर में विधानसभा चुनाव होने हैं। चुनाव आयोग ने अभी तक मतदान की तारीखों की घोषणा नहीं की है, लेकिन राज्य में राजनीतिक सरगर्मी तेज हो गई है। विभिन्न राजनीतिक दल लुभावनी घोषणाएं कर रहे हैं, नये-नये मुद्दों को उछाला जा रहा है। गोपाल खेमका हत्याकांड हो या तंत्र मंत्र के चलते एक ही परिवार के पांच लोगों को जला देने की त्रासद घटना- नीतीश कुमार पर सवाल खड़े किए जा रहे हैं। विधानसभा चुनाव से ठीक पहले मतदाता सूचियों के विशेष सघन पुनरीक्षण अभियान पर संदेह के सवालों के साथ मुखर विपक्षी दल इसके खिलाफ राजनीतिक लड़ाई के साथ ही कानून विकल्पों पर भी गंभीरता से विचार कर रहे हैं। इस बीच, एनडीए की सहयोगी लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के नेता चिराग पासवान ने एनडीए से दूरी बनाते हुए बिहार की सभी 243 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ने का संकेत देकर सियासी परिदृश्य को दिलचस्प बना दिया है। इन्हीं परिदृश्यों के बीच बिहार सरकार ने सरकारी नौकरियों में स्थानीय महिलाओं के लिए 35 प्रतिशत सीटें आरक्षित करने के फैसला लेकर चुनावी सरगर्मियों को एक नया मोड़ दे दिया है। बिहार सरकार का यह निर्णय केवल एक चुनावी रणनीति भर नहीं, बल्कि एक गहरे सामाजिक परिवर्तन का संकेतक भी है। तय है कि इस बार के बिहार चुनाव के काफी दिलचस्प एवं हंगामेदार होंगे। सरकारी नौकरियों में स्थानीय महिलाओं के लिए 35 प्रतिशत आरक्षण के गहरे निहितार्थ हैं। एनडीए की नीतिश सरकार ने स्थानीय महिलाओं को प्राथमिकता देने एवं उनके लिए सरकारी रोजगार उपलब्ध कराने के इस ब्रह्मास्त्र को दाग कर चुनावी समीकरण अपने पक्ष में कर लिये हैं। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इसे "महिला सशक्तिकरण का राजनीतिक समाधान" बताया, क्योंकि राज्य की महिलाएँ कई चुनावों में निर्णायक भूमिका निभा रही हैं। पिछली लोकसभा चुनाव में महिलाओं की मतदान दर पुरुषों से कहीं अधिक रही, 59.45 प्रतिशत महिलाओं ने हिस्सा लिया जबकि पुरुष केवल 53 प्रतिशत मतदान करने पहुंचे। यह आंकड़ा दिखाता है कि चुनावी जीत में महिला मतदाता कितनी निर्णायक हो सकते हैं, साफ है, सत्ता की चाबी वहां महिलाओं ने अपने हाथों में ले ली है और वे धार्मिक व जातिगत आग्रहों से अधिक लैंगिक हितों से प्रेरित हैं। बिहार उन शुरुआती राज्यों में एक है, जिसने पंचायत और स्थानीय निकायों में आधी आबादी के लिए पचास फीसदी सीटें आरक्षित की हैं। इस कदम ने यहां की स्त्रियों में जबर्दस्त राजनीतिक जागरूकता पैदा की है। चुनावों की दशा एवं दिशा बदलने में महत्वपूर्ण एवं निर्णायक किरदार निभाने के कारण ही हरेक राजनीतिक दल महिला वर्ग को आकर्षित करने में जुट गया है। राजद-कांग्रेस-वाम दलों का महागठबंधन 'माई-बहिन मान योजना' के तहत महिलाओं को प्रतिमाह 2,500 रुपये देने का वायदा कर चुका है, तो राजद नेता तेजस्वी यादव बेरोजगारी और डोमिसाइल के मुद्दे को जोर-शोर से उठा रहे हैं। ऐसे में, नीतीश सरकार के इस नीतिगत दांव को समझा जा सकता है। जातिगत और स्थानीय समीकरण भुनाने के लिए निश्चित ही यह एक संगठित चाल है, जहां जाति और आवासीयता दोनों को आधार बनाया गया। यह सर्वविदित तथ्य है कि भारत में शैक्षिक क्षेत्र में लैंगिक खाई लगातार सिमट रही है। बिहार की बेटियां देश के अनेक महानगरों में अपनी योग्यता और मेहनत के दम पर पहचान बना चुकी हैं। सूचना क्रांति, बढ़ती अपेक्षाओं और सामंती बंधनों के ढीले पड़ते जाने के कारण अब ग्रामीण बिहार की बेटियां भी ऊंचे सपने संजो रही हैं। हाल ही में बिहार में शिक्षकों की नियुक्ति के दौरान यह देखा गया कि देश के विभिन्न प्रदेशों की योग्य लड़कियां इंटरव्यू देने आईं, जिनमें से अनेक ने सफलता प्राप्त की और अब बिहार के सरकारी स्कूलों में अध्यापन कर रही हैं। निस्संदेह, यह एक सैद्धांतिक रूप से प्रगतिशील और समावेशी समाज का प्रतीक

है, जहाँ महिलाएं सीमाओं से परे जाकर अपनी पहचान बना रही हैं। लेकिन व्यावहारिक धरातल पर देखें, तो महिला सुरक्षा, सामाजिक असमानता, आवास व पारिवारिक बाधाएं, और प्रवास की मजबूरियाँ अब भी मौजूद हैं। ऐसे में यदि सरकारें योग्य महिलाओं को उनके घर के आस-पास ही रोजगार के अवसर उपलब्ध कराएं, तो यह न केवल महिला सशक्तिकरण की दिशा में सार्थक कदम होगा, बल्कि सामाजिक संरचना में स्थिरता और पारिवारिक सहूलियत का भी कारण बनेगा। यही कारण है कि नीतीश कुमार सरकार महिला मतदाताओं को लुभाने के लिए एक के बाद एक योजनाएं ला रही है। साइकिल योजना, पोशाक योजना, कन्या उत्थान योजना, वृद्धावस्था पेंशन में वृद्धि, पिंक टॉयलेट, महिला पुलिस भर्ती में आरक्षण जैसे कई कदम इस सिलसिले में पहले ही उठाए जा चुके हैं। यह मान्यता कि बेटियां अब सिर्फ अपने घरों की शोभा नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की भागीदार हैं, नीति निर्माण में स्पष्ट झलकने लगा है। यह न केवल बिहार की महिलाओं को उनके अधिकार का अनुभव कराएगा, बल्कि बेरोजगारी से जूझते प्रदेश में स्थानीय प्रतिभा के पलायन को भी रोकेगा। इस फैसले से खास तौर पर निम्न और मध्यमवर्गीय महिलाओं को फायदा होगा, जिनके लिए दूसरे शहरों में जाकर नौकरी करना एक बड़ा पारिवारिक और सामाजिक संकट बन जाता है। घर के पास नौकरी मिलने से न केवल सुरक्षा की भावना बढ़ेगी, बल्कि समाज में महिलाओं की स्थायी उपस्थिति और भूमिका भी मजबूत होगी। हालांकि इस फैसले को लेकर विपक्षी दलों की मिश्रित प्रतिक्रिया सामने आई है। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) ने इसे नीतीश कुमार की चुनावी चाल बताया है और आरोप लगाया है कि सरकार महिलाओं की वास्तविक समस्याओं को दूर नहीं कर पा रही, बल्कि सिर्फ भावनात्मक मुद्दों को उछालकर वोट बटोरने की कोशिश कर रही है। तेजस्वी यादव का कहना है कि "महिला आरक्षण सही है, लेकिन रोजगार के अवसर कब हैं? सरकारी नियुक्तियों की प्रक्रिया वर्षों से लटकी रहती है, परीक्षा की तारीखें टलती हैं, नियुक्ति पत्र देर से आते हैं, ऐसे में आरक्षण का लाभ कब और किसे मिलेगा?" उनकी बातों में सच्चाई भी है, क्योंकि प्रक्रियाओं की पारदर्शिता और समयबद्धता भी उतनी ही आवश्यक है जितनी आरक्षण की नीति। यह महिला आरक्षण अब केवल बिहार के स्थायी निवासियों अर्थात डोमिसाइल महिलाओं के लिए ही होगा। यानी जो महिलाएं राज्य की स्थायी निवासी नहीं हैं, उन्हें इस आरक्षण का लाभ नहीं मिलेगा-उन्हें सामान्य श्रेणी में आवेदन करना होगा। इसलिये इसे केवल घरेलू हितों को साधने वाला प्रत्यक्ष प्रचार माना जा रहा है, जिसमें गैर-स्थायी निवासियों को अवसरों से वंचित किया जा रहा है। विपक्ष इस कदम को डोमिसाइल नीति के अनुरूप बताते हुए सवाल उठा रहा है कि क्या इससे सामाजिक न्याय और समान अवसर की भावना नहीं बिगड़ जाएगी? बिहार में बेरोजगारी चुनावी चर्चा का मुख्य मुद्दा है। युवा खासकर उच्चशिक्षित वर्ग नौकरी की तलाश में है। 35 प्रतिशत आरक्षण के साथ-साथ सरकार ने वेकेंसी क्रिएशन, युवा आयोग गठन, कृषि व सड़क इंफ्रास्ट्रक्चर पर खर्च जैसे उपाय किए है। 2025 के बिहार चुनाव बहुआयामी लड़ाई से परिपूर्ण है, जातिगत समीकरण, युवा और ग्रामीण विकास, मतदाता सूची संशोधन जैसे मुद्दों ने चुनावी माहौल को गहराई दी है। सरकार ने पिछले बजट में 'महिला हाट', 'पिंक बस', 'पिंक टॉयलेट', स्कूल जाने वाली लड़कियों के लिए साइकिल योजनाएं, दिव्यांग उम्मीदवारों के लिए "संबल" वित्तीय सहायता जैसी महिलाओं को लुभाने वाली योजनाओं के प्रावधान किये हैं। नीतीश सरकार ने चुनावों को देखते हुए सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के तहत मिलने वाली राशि में भारी बढ़ोतरी की घोषणा की है। अब वृद्ध, दिव्यांग और विधवा महिलाओं को प्रतिमाह 400 रुपए की बजाय 1100 रुपए पेंशन मिलेगी। इस घोषणा के बाद पूरे बिहार में पेंशन के 1 करोड़ 9 लाख 69 हजार लाभार्थियों में हर्ष का माहौल दिखाई दे रहा है। यह कहना उचित होगा कि बिहार की राजनीति इस बार स्थानीयता, जातिगत समीकरण और सामाजिक कल्याण के मिश्रित आरोपणों के बीच गंभीर मुठभेड़ के दौर से गुजर रही है। चुनाव नतीजे यह तय करेंगे कि क्या यह रणनीतियाँ सचमुच सतत परिवर्तन की ठोस बुनियाद रखेंगी, या चुनावी भाषण के बाद हवा में खो जाएँगी। नवीनतम ओपिनियन पोल बताते हैं कि एनडीए फिर सत्ता में लौट सकता है, खासकर महिलाओं और वरिष्ठ नागरिकों के बीच मजबूत समर्थन के चलते। वहीं, महागठबंधन (आरजेडी, कांग्रेस, अन्य) जातीय समीकरण (ईबीसी-ओबीसी) का आधार लेकर मुकाबले में है।

- ललित गर्ग

पुरानी गाड़ियों को चार महीने की राहत से क्या होगा!

राजधानी दिल्ली में उम्र की तय सीमा पूरी कर लेने वाली गाड़ियों को चार महीने की मोहलत मिली है। किसी को समझ में नहीं आ रहा है कि इसका क्या मतलब है? लोग इस बात का विरोध कर रहे हैं कि अगर उनकी 10 साल पुरानी डीजल गाड़ी या 15 साल पुरानी पेट्रोल गाड़ी सही कंडीशन में है, ठीक से चल रही है और बेहतर रखरखाव की वजह से प्रदूषण भी नहीं फैला रही है तो उम्र के आधार पर उनको क्यों जब्त किया जा रहा है? यह सही तर्क है। व्यावसायिक गाड़ियां, जो 10 साल में पांच लाख या उससे भी ज्यादा किलोमीटर चली हों और बहुत प्रदूषण कर रही हैं उनको जब्त करना तो बनता है लेकिन निजी गाड़ी, जो 10 साल में एक लाख किलोमीटर भी नहीं चली हो उसे क्यों जब्त किया जा रहा है! इस आधार पर लोगों ने विरोध किया, खास कर मध्य वर्ग ने जो भाजपा का समर्थक

है तो दिल्ली सरकार ने वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग यानी सीएक्यूएम से इसे टालने का आग्रह किया। सीएक्यूएम ने इस आग्रह को मंजूर करके इस अभियान को चार महीने टाल दिया है। अब सवाल है कि चार महीने में क्या बदल जाएगा? लोग तो तब भी नाराजगी जताएंगे और यह सवाल उठाएंगे कि सरकार कार कंपनियों से मिली हुई है। उनकी बिक्री बढ़वाने और अपनी टैक्स की कमाई बढ़ाने के लिए यह कदम उठाया जा रहा है। चार महीने के बाद पुरानी गाड़ियों को पेट्रोल व डीजल नहीं देने और उन्हें जब्त करने का अभियान दिल्ली के साथ साथ एनसीआर में भी चलेगा। इसका मतलब है कि यह राहत नहीं, बल्कि मुसीबत है। जब दिल्ली में अभियान शुरू हुआ तो लोग एनसीआर जाकर पेट्रोल, डीजल भरवाने लगे थे। अब उसे भी रोक दिया जाएगा। यानी हर हाल में गाड़ियां जब्त होंगी। लोगों के पास चार महीने का समय है, अगर वे दिल्ली व एनसीआर से बाहर कहीं गाड़ी बेच सकते हैं तो बेच लें।

पक्षियों पर बढ़ता संकट!

बड़े पंखों वाले पक्षियों, बड़े शरीर वाले पक्षियों और सागर तटीय पक्षियों के अस्तित्व समाप्त होने का खतरा सामान्य पक्षियों की तुलना में अधिक है| वैश्विक स्तर पर पक्षियों की लगभग 5 प्रतिशत प्रजातियाँ समाप्त होने के कगार पर हैं पर सागर तटीय पक्षियों में से 12 प्रतिशत प्रजातियाँ खतरे में हैं| एक नए अध्ययन के अनुसार पिछले 500 वर्षों के दौरान जितने पक्षी विलुप्त हो चुके, उससे लगभग तीन-गुने अधिक पक्षी अगले 100 वर्षों में विलुप्त हो जाएंगें| वैज्ञानिकों के अनुसार इस विलुप्तिकरण का प्रभाव केवल पक्षियों पर ही नहीं पड़ेगा बल्कि पूरा पारिस्थितिकीतंत्र इससे प्रभावित होगा| इस अध्ययन को ग्रेट ब्रिटेन के यूनिवर्सिटी ऑफ रीडिंग के वैज्ञानिकों ने किया है और इसे नेचर एण्ड ईकालजी ईवोलूशन नामक जर्नल में प्रकाशित किया है| इस अध्ययन के लिए पक्षियों की ज्ञात लगभग 10,000 प्रजातियों का, उनके आवासों का और उनके अस्तित्व पर खतरे का विस्तृत आकलन किया गया है| उनपर वर्तमान में और भविष्य में होने वाले खतरों का आकलन इन्टरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर की रेड लिस्ट के आधार पर किया गया है| रेड लिस्ट में उन सभी प्रजातियों की विस्तृत जानकारी है जो संकट में हैं और विलुप्त होने के कगार पर हैं| इस अध्ययन के अनुसार अगले 100 वर्षों के भीतर पक्षियों की लगभग 500 प्रजातियों का प्राकृतिक अस्तित्व पृथ्वी से समाप्त हो जाएगा| इसका सबसे बड़ा कारण पक्षियों के प्राकृतिक आवास को नष्ट करना है| दरअसल बढ़ती जनसंख्या के पोषण के नाम पर कृषि का क्षेत्र तेजी से बढ़ाया जा रहा है और इसके लिए बड़े पैमाने पर पेड़ों को काटा जा रहा है, घास के मैदानों को नष्ट किया जा रहा है और सागर तटीय भूमि पर भी खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है| भूमि उपयोग में परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट करने की दर अभूतपूर्व है| इसके अतिरिक्त शिकार, तापमान बृद्धि और जलवायु परिवर्तन, गैर-स्थानिक प्रजातियों को बढ़ावा देने से भी पक्षियों की प्रजातियों पर अस्तित्व के खतरे लगातार बढ़ते जा रहे हैं| पक्षियों के अस्तित्व पर संकट इस कदर गंभीर है कि वैज्ञानिकों के अनुसार यदि आज भी तापमान बृद्धि को आगे बढ़ने से रोक दिया जाए और प्राकृतिक संसाधनों के विनाश पर पूरी तरह रोक लगा दी जाए, तब भी अगले 100 वर्षों में कम से कम 250 से 350 प्रजातियाँ विलुप्त हो जायेंगी| इतनी प्रजातियाँ पूरी तरह से समाप्ति के राह पर हैं| पूरी तरह से समाप्ति की तरफ बढ़ती कुछ प्रजातियों को कैप्टिव प्रजनन विधि द्वारा बचाया जा सकता है| इस विधि में इनका प्रजनन प्रयोगशालाओं में या दूसरे सुरक्षित जगहों पर कराया जाता है और फिर प्राकृतिक आवासों में छोड़ा जाता है| वर्ष 1987 में उत्तरी अमेरिका में पक्षियों की सबसे बड़ी प्रजाति, कैलिफोर्निया कोंडोर, प्राकृतिक आवास में पूरी तरह से विलुप्त हो गई थी| पर, इस प्रजाति के 22 सदस्य प्रयोगशालाओं या चिड़ियाघरों में मानव निगरानी में सुरक्षित रह गए थे| वैज्ञानिकों ने इस प्रजाति को संरक्षित रखने का प्रयास कैप्टिव ब्रीडिंग की मदद से जारी रखा| यह प्रयास सफल रहा और अब तक 350 कोंडोर को प्राकृतिक आवासों में छोड़ा जा चुका है| ऐसे सफल प्रयास यूनाइटेड किंगडम में भी प्राकृतिक आवासों में पूरी तरह विलुप्त हो चुके पक्षियों के साथ भी किया गया है| इस अध्ययन के अनुसार बड़े पंखों वाले पक्षियों, बड़े शरीर वाले पक्षियों और सागर तटीय पक्षियों के अस्तित्व समाप्त होने का खतरा सामान्य पक्षियों की तुलना में अधिक है| वैश्विक स्तर पर पक्षियों की लगभग 5 प्रतिशत प्रजातियाँ समाप्त होने के कगार पर हैं पर सागर तटीय पक्षियों में से 12 प्रतिशत प्रजातियाँ खतरे में हैं| बड़े शरीर वाले पक्षियों पर शिकार और जलवायु परिवर्तन का खतरा अधिक रहता है| बड़े पंखों वाले पक्षियों में प्राकृतिक आवास नष्ट होने के कारण खतरा बढ़ रहा है| तापमान बृद्धि के कारण पक्षियों के विलुप्तीकरण

के साथ ही उनके आकार बदलने का खतरा भी बढ़ता जा रहा है| अत्यधिक ठंढक के माहौल में पक्षी शरीर की गर्मी को अपने पंखों से बाहर नहीं जाने देते, पर चोंच और पैरों में रक्त वाहिकाओ का सघन जाल रहता है और इस कारण उससे शरीर की गर्मी बाहर जाती है| इसीलिए, अत्यधिक ठंढक के समय पक्षी अपने पैरो और चोंच को भी पंखों से ढक लेते हैं| अत्यधिक गर्मी के समय पक्षी सीधे खड़े रहते हैं जिससे शरीर की गर्मी चोंच और पैरों से बाहर निकलती रहे| यह एक सीधा सा तथ्य है कि शरीर के सतह के अनुपात में गर्मी उत्पन्न होगी और चोच और पैरों की सतह का क्षेत्र यह निर्धारित करेगा कि शरीर की गर्मी कितनी तेजी से शरीर से बाहर जायेगी| द रॉयल सोसाइटी पब्लिशिंग में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार जलवायु परिवर्तन और तापमान बृद्धि के कारण पक्षियों को शरीर की गर्मी को सामान्य से अधिक मात्रा में और तेजी से निकालने की जरूरत पड़ेगी, इसलिए संभव है पक्षियों के विकास के क्रम में इनके पैर पहले से अधिक लम्बे और चोंच पहले से अधिक लम्बी होती जाए| यह अध्ययन पक्षियों की 14 प्रजातियों पर किया गया, इस दौरान थर्मल इमेजिंग तकनीक से उनके पैरों और चोंच से निकलने वाली गर्मी का अध्ययन किया गया| इसी अध्ययन को आगे बढाते हुए, साइंस इन पोलैंड नामक वेबसाइट पर एक लेख में बताया गया है कि तापमान बृद्धि से पक्षियों के केवल चोंच और पैर ही लम्बे और बड़े नहीं होंगें बल्कि उनके मुख्य शरीर का आकार भी छोटा होता जाएगा, जिससे उनपर गर्मी का असर कम हो सके| इन्टरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ़ नेचर (आईयूसीएन) की रेड लिस्ट के अनुसार दुनिया में पक्षियों की कुल ज्ञात प्रजातियों में से 49 प्रतिशत प्रजातियों के सदस्यों की संख्या कम होती जा रही है, जबकि केवल 6 प्रतिशत प्रजातियाँ ऐसी हैं जिनके सदस्यों की संख्या बढ़ती जा रही है| उत्तरी अमेरिका में 1970 के बाद से पक्षियों की संख्या लगभग दो-तिहाई रह गयी है| यूरोप में वर्ष 1980 से 2016 के बीच पक्षियों की कुल संख्या में एक-चौथाई की कमी आंकी गयी है| हमारे देश में पक्षियों की लगभग 1350 प्रजातियाँ हैं| लगभग 30000 पक्षी विशेषज्ञ और शौकिया पक्षियों पर अध्ययन करने वाले लोगों और संस्थानों के सम्मिलित अध्ययन को स्टेट ऑफ़ इंडियाज बर्ड्स नामक रिपोर्ट में प्रकाशित किया गया है| इसमें पक्षियों की 942 प्रजातियों के बारे में बताया गया है, जिसमें से 178 प्रजातियाँ संकट में हैं और उनपर तत्काल ध्यान देने की जरूरत है| इन संकटग्रस्त प्रजातियों में नीलकंठ या इंडियन रोलर जैसी कुछ प्रजातियाँ ऐसी भी हैं जिन्हें कुछ समय पहले तक देश में बहुतायद में देखा जाता था, और आईयूसीएन भी उन्हें वैश्विक स्तर पर संकटग्रस्त नहीं मानता| नीलकंठ जैसी कुल 14 प्रजातियाँ हैं जिनके बारे में आईयूसीएन से तत्काल वैश्विक स्तर पर विस्तृत अध्ययन का उनके संरक्षण के स्तर में बदलाव करने का अनुरोध किया गया है| इतना तो स्पष्ट है कि दुनियाभर के पक्षियों की प्रजातियाँ संकट में हैं और बेतरतीब विकास, तापमान बृद्धि, जंगलों का काटना, शिकार, निर्जन द्वीपों पर आबादी का बसना, शिकारी जंतुओं और पक्षियों का बढ़ता दायरा – इस खतरे को और बढ़ा रहे हैं| स्टेट ऑफ द वर्ल्डस बर्ड्स रिपोर्ट के अनुसार वैश्विक स्तर पर पक्षियों के 50 प्रतिशत से अधिक प्रजातियों के सदस्यों की संख्या में भारी गिरावट दर्ज की गई है| पक्षियों पर संकट गहराता जा रहा है, वैज्ञानिक इसे लगातार बात भी रहे हैं पर चरम पूंजीवादी सत्ता और अरबपतियों की बंधक बन चुकी दुनिया में तो अब सामान्य आदमी भी विलुप्त हो रहा है ऐसे में पक्षियों की बिसात ही क्या है?

दो गेंद पर दो विकेट लेकर भी खुश नहीं होंगे जसप्रीत बुमराह, हुई ये बड़ी चूक, नहीं तो रच देते इतिहास

एजेंसी लंदन

भारत और इंग्लैंड के बीच 5 मैचों की टेस्ट सीरीज का तीसरा मुकाबला लॉर्ड्स पर खेला जा रहा है। इस मैच का आज दूसरा दिन है। दूसरे दिन आते ही जो रूट ने अपनी सेंचुरी पूरी की। लेकिन इसके तुरंत बाद जसप्रीत बुमराह ने मैच को पलटकर रख दिया। बुमराह ने एक के बाद एक जल्दी जल्दी इंग्लैंड के तीन बल्लेबाजों को पवेलियन की राह दिखा दी। हालांकि वे अपनी हैट्रिक से चूक गए। जसप्रीत बुमराह ने एक के बाद एक लगातार दो इंग्लिश बल्लेबाजों को आउट कर दिया। सबसे पहले बुमराह ने 88वें ओवर की सबसे पहली गेंद पर रूट को बोल्ड किया। इसके बाद उन्होंने क्रिस वोक्स को पहली ही गेंद पर आउट कर दिया। बुमराह ने रूट को भी शानदार गेंद पर आउट किया। रूट को उम्मीद नहीं थी कि गेंद इतनी अंदर आएगी। गेंद उनके बल्ले का किनारा लेकर स्टंप्स में चली गई। क्रिस वोक्स को बुमराह ने जिस गेंद पर आउट किया, उस पर काफी विवाद हुआ। अंपायरों ने पहले उन्हें नॉट आउट करार दिया था, लेकिन भारत ने रिव्यू लिया। रिव्यू में पता चला कि गेंद ने बल्ले का किनारा लिया था। इसलिए अंपायरों को अपना फैसला बदलना पड़ा। गौतम गंभीर महत्वपूर्ण नहीं... टीम इंडिया के हेड कोच ने पुजारा से कह दी भावुक करने वाली बात हालांकि बुमराह इसके बावजूद अपनी हैट्रिक लेने से चूक गए। बुमराह की हैट्रिक गेंद के वक्त स्ट्राइक पर ब्रेंडन कार्स थे। कार्स ने बुमराह की स्टंप्स पर आती एक तेज तर्रार गेंद को सिर्फ बल्ला लगाकर रोक दिया। इससे कार्स आउट होने से बच गए और बुमराह अपनी हैट्रिक से चूक गए। हैट्रिक के साथ-साथ बुमराह 5 विकेट भी पूरे कर सकते थे। लेकिन वो चूक गए।

कैटरीना सीनियाकोवा और सेम वरबीक ने अपने नाम किया मिक्स्ड डबल्स का खिताब

एजेंसी नई दिल्ली

विंबलडन 2025 के मिक्स्ड डबल्स फाइनल में 10 बार की ग्रैंड स्लैम विमेन्स डबल्स चैंपियन और टेनिस कोर्ट की अनुभवी खिलाड़ी कैटरीना सीनियाकोवा ने अपने डच जोड़ीदार सेम वरबीक के साथ मिलकर बेहतरीन प्रदर्शन किया। इस जोड़ी ने लुइसा स्टेफेनी और जो सैलिसबरी की मजबूत जोड़ी को सीधे सेटों में 7-6 (7-3), 7-6 (7-3) से हराकर प्रतिष्ठित खिताब अपने नाम कर लिया। 10 जुलाई को सेंटर कोर्ट पर खेले गए इस मुकाबले में दोनों सेट बेहद रोमांचक रहे। दोनों सेटों में मुकाबला टाईब्रेक तक गया, लेकिन हर बार सिनियाकोव और वरबीक की जोड़ी ने दबाव में बेहतरीन प्रदर्शन किया और निर्णायक क्षणों में बाजी मारी। फाइनल का समापन भी बेहद शानदार अंदाज में हुआ, जब सिनियाकोवा ने पहले ही मैच पॉइंट पर बेहतरीन फोरहैंड विनर लगाकर खिताबी मुकाबले का अंत किया। इसके साथ ही उन्होंने एक बार फिर दिखा दिया कि वो डबल्स फॉर्मेट में दुनिया की बेहतरीन खिलाड़ियों में क्यों गिनी जाती हैं। जहां सिनियाकोव के लिए ये एक और बड़ी उपलब्धि रही, वहीं नीदरलैंड के खिलाड़ी सेम वरबीक के लिए ये उनके करियर का पहला ग्रैंड स्लैम खिताब रहा। फाइनल जीतनेके बाद वरबीक ने सेंटर कोर्ट पर भावुक अंदाज में अपने पिता के लिए जन्मदिन का गाना गाकर जश्न मनाया। दर्शकों ने भी तालियों और खुशियों के साथ इस पल को यादगार बना दिया।

राधिका यादव की मौत पर आया नीरज चोपड़ा का रिएक्शन, ये कहकर जीत लिया दिल

एजेंसी नई दिल्ली

हरियाणा की एक टेनिस खिलाड़ी राधिका यादव की उनके पिता द्वारा हत्या कर दी गई। इस घटना पर जेवलिन स्टार नीरज चोपड़ा ने दुख जताया है। राधिका के पिता दीपक यादव ने गुरुग्राम स्थित घर में उन्हें गोली मार दी। पुलिस हिरासत में दीपक ने अपना जुर्म कबूल कर लिया है। पुलिस के अनुसार, दीपक अपनी बेटी के टेनिस अकादमी चलाने से नाखुश था और उसे ताने मारता था। नीरज चोपड़ा ने इस घटना पर दुख जताते हुए परिवारों को एक-दूसरे का समर्थन करने की बात कही है। उन्होंने कहा कि हरियाणा की महिला एथलीट देश के लिए अच्छा कर रही हैं और उन्हें आदर्श मानना चाहिए। नीरज चोपड़ा ने इस घटना पर दुख जताते हुए कहा, 'मैं इस बारे में कुछ लोगों से पहले भी बात कर रहा था। हमारे पास पहले से ही हरियाणा की कुछ बेहतरीन महिला एथलीटों के उदाहरण हैं जो देश के लिए अद्भुत काम कर रही हैं। परिवारों में, आपको एक-दूसरे का समर्थन करना चाहिए, और जो (महिला एथलीट) अच्छा कर रही हैं, उन्हें आदर्श मानना चाहिए और उनका अनुसरण करना चाहिए।' विवाद इतना बढ़ गया कि दीपक ने राधिका पर पांच गोलियां चलाईं, जिनमें से तीन उसे लगीं और उसकी मौत हो गई। इस मामले में नया मोड़ तब आया जब दीपक यादव ने अपने बयान बदल दिए। परिवार के सूत्रों के अनुसार, राधिका सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर बनना चाहती थी और कई इन्फ्लुएंसरों से मिल भी रही थी। उसके पिता को राधिका का शॉर्ट-फॉर्म वीडियो (रील) बनाना पसंद नहीं था, जिसके कारण उनके रिश्ते में और तनाव आ गया था। यह जानकर हैरानी हुई कि जिस दिन राधिका यादव की हत्या हुई, यानी 10 जुलाई, उसी दिन उनकी मां मंजू यादव का जन्मदिन भी था। उस सुबह, राधिका अपनी मां के लिए कुछ खास बनाने के लिए रसोई में गई थी, तभी दीपक ने पीछे से उस पर तीन गोलियां चला दीं।

जो रूट के शतक से इंग्लैंड ने पहली पारी में बनाए 387 रन, जसप्रीत बुमराह ने खोला पंजा

एजेंसी लंदन

भारत के खिलाफ लॉर्ड्स टेस्ट मैच के दूसरे दिन इंग्लैंड की पारी 387 रन पर सिमट गई। इंग्लैंड की की तरफ से पहली पारी में जो रूट, जेमी स्मिथ और ब्रायडन कार्स ने दमदार बल्लेबाजी की। इसके अलावा कप्तान बेन स्टोक्स और ओली पोप ने 44-44 रनों का योगदान दिया, जबकि निचले क्रम में ब्रायडन कार्स ने भारतीय गेंदबाजों का डटकर सामना करते हुए 83 गेंद में 56 रनों की पारी खेली। इस पहली पारी में धीमी बल्लेबाजी के बावजूद इंग्लैंड की टीम ने 400 रन के करीब पहुंचने में सफल रही। वहीं गेंदबाजी की बात की जाए तो टीम इंडिया की तरफ से सबसे जसप्रीत बुमराह ने 5 विकेट लिए। विदेशी धरती पर जसप्रीत बुमराह का टेस्ट में यह13वीं बार पंजा था। बुमराह ने खेल के दूसरे दिन के पहले ही घंटों में बेन स्टोक्स, जो रूट और क्रिस वोक्स को आउट किया। इसके बाद उन्होंने दूसरे सेशन में जोफ्रा आर्चर को बोल्ड पर अपने 5 विकेट पूरे किए। इसके नीतीश कुमार रेड्डी और मोहम्मद सिराज ने दो-दो विकेट लिए वहीं। रविंद्र जडेजा के खाते में 1 विकेट आया। लॉर्ड्स टेस्ट मैच के दूसरे दिन के खेल की बात करें तो जो रूट के 37वां शतक पूरा किया। हालांकि इंग्लैंड की ये खुशी ज्यादा देर नहीं चली। भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने शानदार गेंदबाजी करते हुए तीन विकेट झटक लिए जिससे मेजबान टीम का स्कोर दिन लंच तक सात विकेट पर 353 रन हो गया। पर खेल के दूसरे घंटे में जैमी स्मिथ (नाबाद 51 रन) और ब्रायडन कार्स (नाबाद 33 रन) ने भारतीय तेज गेंदबाजों की गेंदों का डटकर सामना करते हुए आठवें विकेट के लिए 82 रन की अटूट साझेदारी करके भारत को निराश किया। 'ड्यूक्स' गेंद एक बार फिर चर्चा का विषय बन गई क्योंकि इसकी हालत से निराश भारतीय टीम को इस सत्र में दो बार लाल गेंद बदलनी पड़ी। इंग्लैंड ने दिन की शुरुआत चार विकेट पर 251 रन से की। लेकिन बुमराह की शानदार गेंदबाजी के सामने इंग्लैंड ने पहले घंटे में कप्तान बेन स्टोक्स (44), रूट (104) और क्रिस वोक्स (0) के विकेट गंवा दिए। स्मिथ को इस दौरान जीवनदान भी मिला जब केएल राहुल ने मोहम्मद सिराज की गेंद पर फॉर्म में चल रहे इस विकेटकीपर बल्लेबाज का कैच छोड़ दिया। दिन की पहली ही गेंद पर लॉर्ड्स में अपना रिकॉर्ड आठवां टेस्ट शतक पूरा करने वाले रूट अपनी पारी को आगे नहीं बढ़ा सके और बुमराह का दिन का दूसरा शिकार बने जिनकी गेंद उनके मिडिल स्टंप उखाड़ गई। यह 11वीं बार है जब बुमराह ने टेस्ट मैचों में इंग्लैंड के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज को आउट किया है। अगली ही गेंद पर वोक्स विकेट के पीछे कैच आउट हो गए। यह हैरानी भरा था कि शुभमन गिल लगभग 10 ओवर पुरानी दूसरी नई ड्यूक्स गेंद को बदलना चाहते थे।

गेंद बदलने को लेकर अंपायर से भिड़ गए शुभमन गिल, मैदान पर दिखा एंग्री यंग मैन अवतार

एजेंसी लंदन

इंग्लैंड के खिलाफ लॉर्ड्स टेस्ट मैच के दूसरे दिन भारतीय क्रिकेट टीम ने धमाकेदार शुरुआत की। खास तौर से जसप्रीत बुमराह ने बैक टू बैक तीन विकेट लेकर इंग्लैंड को बैकफुट पर धकेल दिया। इंग्लैंड की टीम ने पहले दिन के खेल में 82 ओवर में 4 विकेट के नुकसान पर 251 रन का स्कोर खड़ा किया था। खेल के दूसरे दिन के 10 ओवर के बाद टीम इंडिया के कप्तान शुभमन गिल ने अंपायर से गेंद बदलने की बात कही, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। ऐसे में भारतीय कप्तान अंपायर पर बिफर गए। इस घटना वीडियो अब तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। टीम इंडिया ने पहले ही अंपायर से गेंद के बारे में शिकायत की थी। दूसरे दिन के खेल के बाद यह लगभग 10 ओवर पुरानी हो गई थी। यही कारण है कि कप्तान शुभमन गिल ने गेंद को बदलने की मांग की। हालांकि, अंपायर ने गेंद को हूप के पार डालकर देखी तो उन्हें ऐसा लगा कि गेंद अभी खेलने लायक बचा हुआ और उन्होंने शुभमन गिल की मांग को खारिज कर दी। अंपायर की तरफ गेंद बदलने की मांग को खारिज किए जाने के बाद टीम इंडिया के कप्तान शुभमन गिल बुरी तरह से भड़क गए। दोनों के बीच कुछ देर के लिए जोरदार बहस हुई। गिल के साथ मोहम्मद सिराज भी स्टंप माइक में कहते हुए सुनाई दिए कि गेंद सच में 10 ओवर पुरानी हो चुकी है, लेकिन इसके बावजूद कुछ नहीं हुआ और अंपायर ने खेल को शुरू करने का आदेश दिया। इस घटना से कुछ देर के लिए मैदान पर एक गर्म माहौल देखने को मिला। लॉर्ड्स टेस्ट मैच के दूसरे दिन भारतीय टीम जैसे ही मैदान पर उतरी सबसे इंग्लैंड के जो रूट ने अपना शतक पूरा किया। हालांकि, इंग्लैंड की ये खुशी ज्यादा देर तक नहीं चली और जसप्रीत बुमराह ने कप्तान बेन स्टोक्स को बोल्ड कर दिया। इसके बाद रूट भी बुमराह की रफ्तार का शिकार बने और फिर क्रिस वोक्स का विकेट मिला।

व्यापार

अमेरिका को नहीं अखर रही भारत और रूस की दोस्ती, 500% टैक्स लगाने के लिए पेश किया बिल

एजेंसी नई दिल्ली

अमेरिका को भारत समेत वे देश नहीं अखर रहे जिनकी दोस्ती रूस के साथ है। भारतीय दूतावास सीनेटर लिंडसे ग्राहम (रिपब्लिकन) और रिचर्ड ब्लूमेंथल (डेमोक्रेट) ने एक बिल पेश किया है। इसका नाम Sanctioning Russia Act of 2025 है। यह बिल रूस से तेल और ऊर्जा उत्पाद खरीदने वाले देशों पर दबाव बढ़ाएगा। खासकर भारत और चीन पर। यह बिल बहुत बड़ा और विवादों से भरा है। इस बिल में एक खास बात है। अगर कोई देश रूस से तेल, गैस या यूरेनियम खरीदता है तो उस देश से अमेरिका में आने वाले सामान पर 500% का टैक्स लगेगा। इससे वह सामान बहुत महंगा हो जाएगा। यह बिल इसलिए लाया गया है ताकि दुनिया रूस पर ऊर्जा के लिए निर्भर न रहे और यूक्रेन में युद्ध के लिए रूस को सजा दी जा सके। इस बिल से पूरी दुनिया में हलचल मची हुई है। अमेरिका के इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ ऐसा, किस जिद पर अड़े हैं डोनाल्ड ट्रंप? भारत पर क्या पड़ेगा असर? इस बिल का भारत पर इसका बहुत बुरा असर पड़ेगा। क्योंकि रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद से भारत सस्ते रूसी तेल से बहुत फायदा उठा रहा है। साल 2024 में भारत के कुल कच्चे तेल के आयात में रूसी तेल का हिस्सा लगभग 35% था। इस बिल का भविष्य अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर भी निर्भर करता है। उन्हें यह बिल अभी जैसा है, वैसा पसंद नहीं है। यह बिल सामान्य आर्थिक प्रतिबंधों से अलग है। यह बिल सीधे रूसी कंपनियों या बैंकों को निशाना नहीं बनाता, बल्कि यह उन देशों को मजबूर करता है जो रूस से ऊर्जा खरीदते हैं। अगर वे ऐसा करते हैं तो उनके अमेरिका को होने वाले निर्यात पर जुर्माना लगाया जाएगा। बिल में यह भी कहा गया है कि अमेरिका में आने वाले सामान पर 500% का टैक्स लगेगा। राष्ट्रपति के पास यह अधिकार होगा कि वे 180 दिनों के लिए इस टैक्स को रोक सकते हैं। दूसरी बार भी टैक्स को रोका जा सकता है, लेकिन इसके लिए कांग्रेस की मंजूरी जरूरी होगी। खबरों के अनुसार ट्रंप इस बिल पर तभी साइन करेंगे जब उन्हें इसे लागू करने का पूरा अधिकार मिलेगा। अभी बिल में यह लिखा है कि कांग्रेस की भी मंजूरी जरूरी होगी। जैसे, अगर राष्ट्रपति टैक्स को रोकना चाहते हैं तो कांग्रेस उसे रोक सकती है। व्हाइट हाउस को यह बात पसंद नहीं है। उनका कहना है कि इससे राष्ट्रपति की विदेश नीति चलाने की शक्ति कम हो जाएगी। 'द वॉल स्ट्रीट जर्नल' ने पिछले महीने लिखा था कि ट्रंप की टीम चाहती है कि बिल में 'shall' की जगह 'may' लिखा जाए। इससे राष्ट्रपति को टैक्स लगाने या न लगाने का अधिकार मिल जाएगा। वे यह भी चाहते हैं कि राष्ट्रपति के पास सहयोगियों, जरूरी सामान और राष्ट्रीय सुरक्षा के मामलों में छूट देने का अधिकार हो और कांग्रेस के पास वीटो का अधिकार न हो। यानी ट्रंप चाहते हैं कि प्रतिबंधों को लागू करने का पूरा अधिकार उनके पास हो। अगर यह बिल अभी जैसा है वैसा ही पास हो जाता है तो इसका व्यापार और कूटनीति पर बहुत बुरा असर पड़ेगा। 500% का टैक्स इतना ज्यादा है कि भारत, चीन, तुर्की और अफ्रीका जैसे देशों से अमेरिका में सामान आना बंद हो जाएगा। इससे व्यापार में बहुत परेशानी होगी। अमेरिकी कंपनियों और ग्राहकों के लिए चीजें महंगी हो जाएंगी। इससे अमेरिका के दोस्तों के साथ रिश्ते भी खराब हो सकते हैं। बहुत से देश, खासकर गरीब देश, प्रतिबंधों को पश्चिमी देशों की दादागिरी मानते हैं। अगर अमेरिका उन्हें रूस से ऊर्जा खरीदने या अमेरिका से व्यापार करने में से किसी एक को चुनने के लिए मजबूर करेगा, तो इससे नुकसान हो सकता है। कुछ देश चीन या रूस के साथ अपने रिश्ते और गहरे कर सकते हैं। व्यापार में बदलाव और जवाबी टैक्स से अमेरिका में महंगाई बढ़ सकती है। खासकर इलेक्ट्रॉनिक्स, कपड़ा और दवाइयों के क्षेत्र में।

गाड़ी की विंडस्क्रीन पर नहीं लगा है फास्टैग तो आएगी बड़ी मुसीबत! NHAI ने कर ली पूरी तैयारी, क्या होगा एक्शन

एजेंसी नई दिल्ली

अगर आप अपनी गाड़ी की विंडस्क्रीन पर फास्टैग नहीं लगाते हैं और टोल प्लाजा पर हाथ (टैग-इन-हैंड) में लेकर दिखाते हैं, ऐसे फास्टैग को ब्लैक लिस्ट करने के लिए एनएचएआई बड़ा अभियान चला रहा है। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) का कहना है कि कुछ गाड़ी वाले कार का फास्टैग ट्रक और अन्य बड़े वाहन में चलाने की कोशिश करते हैं। लेकिन अब से जिस भी गाड़ी पर फास्टैग चिपका नहीं पाया गया। उस फास्टैग को ब्लैक लिस्ट कर दिया जाएगा। एनएचएआई का कहना है कि देश से टैग-इन-हैंड सिस्टम को खत्म करने के लिए एनएचएआई के तमाम टोल प्लाजा पर ऐसे फास्टैग को ब्लैक लिस्ट करने के लिए एक स्पेशल ड्राइव चलाई जा रही है। इसके तहत जिस भी टोल प्लाजा से ऐसी गाड़ी वाले गुजरेंगे। उन टोल प्लाजा वालों की यह ड्यूटी है कि ऐसे फास्टैग की डिटेल नोट कर एनएचएआई को ई-मेल करें। इसके बाद इन्हें ब्लैक लिस्ट करा जाएगा। अगर किसी टोल से टैग-इन-हैंड वाली गाड़ी गुजर जाती है तो क्या उस टोल वाले पर भी कोई एक्शन लिया जाएगा या केवल फास्टैग को ही ब्लैक लिस्ट किया जाएगा। इस बारे में एनएचएआई की तरफ से कोई जवाब नहीं दिया गया। एनएचएआई का कहना है कि टैग-इन-हैंड या लूज फास्टैग वाले अवैध सिस्टम को खत्म किया जाएगा। यह इसलिए भी जरूरी है कि आने वाले समय में देश में वार्षिक टोल पास सिस्टम लागू होने वाला है। यह 15 अगस्त से शुरू होगा। साथ ही मल्टी-लेन फ्री फ्लो (एमएलएफएफ) टोलिंग जैसा सिस्टम भी आने वाला है। ऐसे में यह जरूरी हो जाता है कि सभी गाड़ियों पर फास्टैग ठीक से सही जगह लगाया जाए। ताकि उसे स्कैन करने में भी कोई परेशानी ना आए। टैग-इन-हैंड से कई तरह की परेशानियां भी सामने आती हैं। इससे ना केवल टोल प्लाजा पर अनावश्यक रूप से समय अधिक लगता है बल्कि चार्जबैक, टोल कटने में परेशानी, टोल प्लाजा पर गाड़ियों भी भीड़ बढ़ना और अन्य तरह की असुविधा होती है। एनएचएआई ने समय पर सुधारात्मक उपाय सुनिश्चित करने के लिए अलग से ईमेल आईडी भी मुहैया कराई है। ताकि टोल कलेक्शन करने वाली एजेंसी ऐसे फास्टैग की तुरंत सूचना एनएचएआई का दें। हालांकि, एनएचएआई की यह ड्राइव कितनी गंभीरता से चलेगी। इसका पता कुछ दिनों बाद लग सकेगा।

गिरते बाजार में मुनाफा दे गया यह शेयर, 20% तक की आई तेजी, जानें क्यों आया इतना उछाल

एजेंसी नई दिल्ली

नई दिल्ली: शुक्रवार को शेयर बाजार गिरावट के साथ बंद हुआ, लेकिन कई शेयर ऐसे भी रहे जिनमें जबरदस्त तेजी आई। इन्हीं में एक शेयर ग्लेनमार्क फार्मास्युटिकल्स कंपनी का भी है। इसके शेयरों में शुक्रवार को 20% तक की तेजी आई। इससे शेयर की कीमत 2286 रुपये के उच्च स्तर पर पहुंच गई। हालांकि बाद में यह शेयर 14.51% की तेजी के साथ 2181.55 रुपये पर बंद हुआ। इस कंपनी के शेयर में तेजी अमेरिका की बड़ी दवा कंपनी AbbVie के साथ हुए एक बड़े समझौते के कारण आई। यह समझौता ग्लेनमार्क की कैंसर की दवा ISB 2001 के लिए था। यह एक लाइसेंसिंग डील थी और इसकी कीमत 2 अरब डॉलर थी। इस खबर ने छोटे निवेशकों का ध्यान खींचा। लेकिन, सबसे ज्यादा फायदा भारत के बड़े म्यूचुअल फंडों को हुआ। एक लाख के 6 करोड़ बनाने वाला शेयर, इस मल्टीबैगर स्टॉक में मचाई धूम, कभी 5 रुपये से कम थी कीमत बीएसई के आंकड़ों के अनुसार ग्लेनमार्क में म्यूचुअल फंड की हिस्सेदारी जून 2023 में 9.11% थी। यह मार्च 2025 तक बढ़कर 14.60% हो गई। मार्च 2025 तक की जानकारी के अनुसार, कंपनी के प्रमोटरों के पास लगभग 46% शेयर हैं। वहीं विदेशी निवेशकों के पास करीब 23.16% शेयर हैं। पब्लिक शेयरहोल्डिंग डेटा बताता है कि छोटे निवेशकों की हिस्सेदारी जून 2023 में 9.99% थी। यह मार्च 2025 में घटकर 7.69% हो गई है। इसमें उन व्यक्तिगत शेयरधारकों को शामिल किया गया है जिनके पास 2 लाख रुपये तक की शेयर पूंजी है। ग्लेनमार्क फार्मास्युटिकल्स कंपनी का पिछला रिटर्न भी काफी शानदार रहा है। एक महीने में इसने 30 फीसदी से ज्यादा रिटर्न दिया है। वहीं बात अगर एक साल के रिटर्न की करें तो यह 50 फीसदी से ज्यादा रहा है। लॉन्ग टर्म में भी इसने निवेशकों की जेबें भर दी हैं। 5 साल में इस शेयर ने 400 फीसदी से ज्यादा रिटर्न दिया है। अगर आपने 5 साल पहले इसमें एक लाख रुपये निवेश किए होते तो उनकी वैल्यू आज 5 लाख रुपये होती। यानी आपको एक लाख रुपये के निवेश पर 4 लाख रुपये का प्रॉफिट हो चुका होता।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक दयाराम दिव्य द्वारा मुद्रक वेदांत प्रभाकर, मेधा कम्प्यूटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, ऑफिस नं. 128, वार्ड नं. 25, नंदभवन कांवाखेड़ा पार्क के पास, भीलवाड़ा 311001 (राज.) से मुद्रित एवं एस-20, प्रतापनगर, भीलवाड़ा (राज.) से प्रकाशित। संपादक दयाराम दिव्य 96949 57624, 87695 58132 * PRB एक्ट के तहत ख़बरों के चयन के लिए उत्तरदायी। सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र भीलवाड़ा होगा